http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2025) वर्ष 5, अंक 12, 23-25

Article ID:518

ग्रामीण युवाओं में कृषि कौशल और रोजगार निर्माण

रीटा फ्रेडरिक्स

सीईओ, प्रिसिजन ग्रो (टेक विजिट आईटी प्राइवेट लिमिटेड की एक इकाई)

*अनुरूपी लेखक

रीटा फ्रेडरिक्स*

भारत की आर्थिक संरचना में कृषि सदियों से एक प्रमुख आधार रही है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, जहाँ अधिकांश परिवार अपनी आजीविका का प्रमुख स्रोत खेती और उससे जुड़े विविध कार्यों को मानते हैं। वर्तमान समय में कृषि केवल खाद्यान्न उत्पादन का साधन नहीं रह गई है, बल्कि यह आधुनिक तकनीकों, नवाचारों और उच्च मूल्य वाले उत्पादों पर आधारित एक उद्यमशीलता-प्रधान एवं तकनीकी क्षेत्र के रूप में विकसित हो रही है। डिजिटल कृषि, ड्रोन तकनीक, प्रिसीजन फार्मिंग, सेंसर-आधारित निगरानी, और प्रसंस्करण एवं वैल्यू एडिशन जैसी उन्नत तकनीकों ने कृषि क्षेत्र में नए रोजगार, नवाचार और व्यवसाय के अवसर तेजी से बढ़ाए हैं। ग्रामीण युवाओं में ऊर्जा, तकनीकी अनुकूलनशीलता, नवाचार क्षमता और जोखिम उठाने की क्षमता अधिक होती है इसलिए यदि उन्हें उचित कौशल, प्रशिक्षण और संसाधन उपलब्ध कराए जाएँ, तो वे कृषि को एक लाभकारी और सम्मानजनक करियर के रूप में अपना सकते हैं। अतः ग्रामीण युवाओं में कृषि कौशल का विकास केवल रोजगार सृजन ही नहीं बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

ग्रामीण युवाओं में कृषि कौशल की आवश्यकता

1. पारंपरिक कृषि तकनीकों की सीमाएँ

कई दशकों से इस्तेमाल हो रही पारंपरिक खेती पद्धतियाँ अब वर्तमान समय की बाजार मांग, गुणवत्ता मानकों और जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना नहीं कर पाती हैं। कम उत्पादन, उच्च लागत, मिट्टी की उर्वरता में कमी और जल संकट जैसी समस्याएँ पारंपरिक तकनीकों से हल नहीं हो पातीं, इसलिए युवाओं को नई तकनीकी दक्षताओं की आवश्यकता बढ़ गई है।

2. युवाओं में बढ़ती बेरोजगारी

ग्रामीण क्षेत्रों में उद्योग एवं अन्य रोजगार के सीमित अवसरों के कारण युवाओं में बेरोजगारी तेजी से बढ़ रही है। कृषि से जुड़े कौशल उन्हें स्व-रोजगार, उद्यमिता और नए व्यवसाय शुरू करने के लिए सक्षम बनाते हैं, जिससे वे स्वयं के साथ अन्य लोगों को भी रोजगार दे सकते हैं।

3. जलवायु-स्मार्ट और आधुनिक कृषि की मांग

जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को देखते हुए अब ऐसी तकनीकों की आवश्यकता है जो उत्पादन जोखिम को कम करें और संसाधनों का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करें। सेंसर-आधारित खेत निगरानी, ड्रिप एवं स्प्रिंकलर जैसे माइक्रो-इरिगेशन सिस्टम, ड्रोन सर्वेक्षण, और स्मार्ट खेती तकनीकों के लिए कुशल प्रशिक्षित युवाओं की मांग लगातार बढ़ रही है।

4. कृषि को लाभकारी एवं उद्यमशील बनाने की जरूरत

उद्यमशीलता आधारित कृषि जैसे पौध नर्सरी, बीज उत्पादन, मशरूम उत्पादन, जैव उर्वरक इकाइयाँ, या फ्लोरीकल्चर कम निवेश में उच्च आय प्रदान कर सकती हैं। इन क्षेत्रों में तकनीकी

ज्ञान और प्रबंधन कौशल होने पर युवा अत्यधिक लाभ कमा सकते हैं।

5. मूल्य संवर्धन और प्रसंस्करण के बढ़ते अवसर

कृषि उत्पादों की प्रोसेसिंग, पैकेजिंग, ब्रांडिंग एवं विपणन से आय कई गुना तक बढ़ाई जा सकती है।

इसके लिए युवाओं को खाद्य प्रसंस्करण, उत्पाद विकास, गुणवत्ता परीक्षण, और बाजार प्रबंधन जैसे कौशल सीखना आवश्यक है।

कृषि क्षेत्र में उभरते कौशल के प्रमुख क्षेत्र

1. स्मार्ट एवं डिजिटल कृषि कौशल

- ✓ **ड्रोन संचालन एवं सर्वेक्षण**: खेतों की निगरानी, स्प्रेइंग एवं भूमि-आकृति सर्वेक्षण के लिए ड्रोन संचालन अब एक पेशेवर कौशल बन चुका है।
- ✓ **IoT आधारित खेत निगरानी**: मिट्टी की नमी, तापमान, पोषक तत्व एवं मौसम डेटा को सेंसर के माध्यम से मॉनिटर करना अब आधुनिक खेती का अभिन्न हिस्सा है।
- ✓ **मोबाइल एप आधारित कृषि सलाह**: किसान ऐप्स के माध्यम से रोग पहचान, मौसम पूर्वानुमान और उर्वरक सलाह देने के लिए प्रशिक्षित युवाओं की आवश्यकता है।
- ✓ **रिमोट सेंसिंग एवं भौगोलिक सूचना प्रणाली**: यह कौशल भूमि उपयोग योजना, फसल मैपिंग और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

2. उत्पादन एवं संसाधन प्रबंधन कौशल

- ✓ उच्च गुणवत्ता वाले बीज और पौधा उत्पादन तकनीकें
- ✓ पॉलीहाउस, नेटहाउस एवं संरक्षित खेती के संचालन
- ✓ माइक्रो-इरिगेशन, जल प्रबंधन, और मिट्टी स्वास्थ्य सुधार
- ✓ प्राकृतिक, जैविक एवं जलवायु-स्मार्ट खेती

3. मूल्य संवर्धन एवं प्रसंस्करण कौशल

- ✓ फल-सब्जी प्रसंस्करण एवं पैकेजिंग
- ✓ अचार, जैम, जेली, स्क्वैश एवं डिहाइड्रेशन यूनिट
- ✓ डेयरी, पोल्ट्री, फिश प्रोसेसिंग यूनिट
- ✓ खाद्य गुणवत्ता नियंत्रण एवं मानक पालन

4. कृषि विपणन एवं उद्यमिता कौशल

- ✓ ई-नाम एवं ऑनलाइन मंडियों का संचालन
- ✓ एफपीओ/एफपीसी प्रबंधन एवं कृषि व्यवसाय संचालन
- ✓ ब्रांडिंग, डायरेक्ट मार्केटिंग एवं वैल्यू चेन प्रबंधन
- ✓ स्टार्टअप इनोवेशन, बिजनेस प्लानिंग एवं वित्तीय प्रबंधन

ग्रामीण युवाओं के लिए कृषि-आधारित रोजगार के अवसर

1. कृषि उद्यमिता

- ✓ पौध नर्सरी, बीज उत्पादन एवं ग्रीनहाउस उद्यम
- ✓ मशरूम, मधुमक्खी पालन, बकरी पालन, पोल्ट्री व मछली पालन
- ✓ जैव उर्वरक एवं जैव कीटनाशक उत्पादन इकाइयाँ
- ✓ औषधीय एवं सुगंधित पौधों की खेती

2. डिजिटल कृषि सेवा केंद्र

- ✓ ड्रोन सेवा प्रदाता व्यवसाय
- ✓ मिट्टी स्वास्थ्य परीक्षण व सैंपलिंग केंद्र
- ✓ फसल निगरानी एवं सलाहकार सेवा
- ✓ कृषि उपकरण किराया केंद्र (Custom Hiring Center)

3. एफपीओ /क्लस्टर आधारित रोजगार

- ✓ मार्केटिंग विशेषज्ञ
- ✓ गुणवत्ता नियंत्रण प्रबंधक
- ✓ सप्लाई चेन मैनेजर
- ✓ वेयरहाउस एवं स्टोरेज मैनेजर

4. कृषि मशीनरी संचालन एवं मरम्मत

- ✓ ट्रैक्टर, पावर टिलर, हार्वेस्टर संचालन
- ✓ ड्रोन तकनीशियन और सर्विस इंजीनियर
- ✓ पंपसेट, स्प्रेयर एवं अन्य मशीनरी की मरम्मत

5. कृषि प्रसंस्करण इकाइयाँ

- ✓ ग्रेडिंग एवं पैकिंग सेंटर
- ✓ मिनी मिलिंग यूनिट, तेल निष्कर्षण यूनिट
- ✓ कोल्ड स्टोरेज संचालन
- ✓ फूड प्रोसेसिंग एवं पल्पिंग यूनिट

कौशल विकास के लिए सरकारी योजनाएँ और संस्थागत पहल

1. प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना

यह योजना कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में युवाओं को प्रमाणित कौशल प्रशिक्षण प्रदान करती है, जिससे वे रोजगार या स्व-रोजगार के लिए सक्षम बनते हैं।

2. कृषि विज्ञान केंद्र

KVKs युवाओं को आधुनिक खेती तकनीकों, उपकरणों और प्रसंस्करण की हैंड्स-ऑन ट्रेनिंग देने वाले प्रमुख संस्थान हैं।

3. आत्मा और राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान

ये संस्थाएँ कृषि उद्यमिता, प्रबंधन कौशल, विपणन तकनीक और नवाचार आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करती हैं।

4. स्टार्टअप इंडिया एवं एग्री-इनक्यूबेशन सेंटर

ये प्लेटफॉर्म युवाओं को फंडिंग, मेंटरशिप, तकनीकी सहायता और स्टार्टअप शुरू करने के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराते हैं।

ग्रामीण युवाओं के कौशल विकास में आने वाली चुनौतियाँ

- ✓ ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण केंद्रों की कमी
- ✓ आधुनिक तकनीकों व उपकरणों की सीमित उपलब्धता
- ✓ युवाओं में कृषि को कम आकर्षक पेशा समझने की मानसिकता
- ✓ इंटरनेट, डिजिटल साक्षरता और सूचना उपलब्धता का अभाव
- ✓ वित्तीय संसाधनों और बैंकिंग सहायता की कमी
- ✓ प्रशिक्षण के बाद रोजगार मार्गदर्शन व प्लेसमेंट प्लेटफॉर्म का अभाव

कृषि कौशल एवं रोजगार बढ़ाने के लिए रणनीतियाँ

1. स्थानीय स्तर पर कृषि कौशल केंद्रों की स्थापना

हर ब्लॉक/ग्राम पंचायत में तकनीकी प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए जाएँ ताकि युवाओं को स्थानीय स्तर पर कौशल प्रशिक्षण मिल सके।

2. स्कूल एवं कॉलेज स्तर पर कृषि शिक्षा का विस्तार

एग्री-क्लब, फील्ड विजिट, प्रैक्टिकल ट्रेनिंग और इंटर्नशिप को शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाए।

3. PPP मॉडल का उपयोग

कृषि प्रशिक्षण में निजी कंपनियों, उद्योगों और स्टार्टअप को साझेदार बनाया जाए ताकि तकनीकी व रोजगार अवसर बढ़ सकें।

4. डिजिटल शिक्षा प्लेटफॉर्म का विस्तार

ऑनलाइन कोर्स, वर्चुअल लैब, मोबाइल ऐप आधारित ट्रेनिंग से युवाओं को आधुनिक तकनीक की सीख उपलब्ध कराई जाए।

5. वित्तीय सहायता एवं स्टार्टअप सपोर्ट

सस्ते ऋण, सब्सिडी, मार्गदर्शन, मेंटरशिप एवं बाजार लिंकिंग की सुविधाएँ उपलब्ध कराकर युवाओं को सफल उद्यमी बनाया जाए।

निष्कर्ष

ग्रामीण युवाओं में कृषि कौशल विकास तथा रोजगार निर्माण भारत के ग्रामीण विकास का वास्तविक आधार है। आधुनिक तकनीक, डिजिटल कृषि, प्रसंस्करण, उद्यमिता, और एग्री-सर्विसेज के बढ़ते अवसरों ने कृषि को एक आकर्षक और लाभकारी क्षेत्र के रूप में स्थापित कर दिया है। यदि युवाओं को सही दिशा, उचित प्रशिक्षण, वित्तीय संसाधन, और तकनीकी सहायता प्रदान की जाए, तो वे न केवल स्व-रोजगार उत्पन्न कर सकते हैं, बल्कि कृषि क्षेत्र को अधिक प्रतिस्पर्धी, टिकाऊ और आत्मनिर्भर बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।